लक्ष्मी-नारायण

No.	Murli/Avyakt Vani Points	Download
1	ब्रह्माकुमारियों के आगे प्रजापिता अक्षर ज़रूर लिखना है। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है। (मु. 7.9.77 पृ.2 आदि)	Download
2	लक्ष्मी-नारायण का चित्र बहुत अच्छा है। इनमें सारा सेट है। त्रिमूर्ति भी, लक्ष्मी-नारायण भी, राधे-कृष्ण भी हैं। यह चित्र भी कोई रोज देखता रहे तो याद रहे शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको यह बना रहे हैं।" (मु. 7.8.65 पृ.2 अंत)	Download
3	अपना एम ऑब्जेक्ट देखने से ही रिफ्रेशमेंट आ जाती है, इसलिए बाबा कहते हैं कि यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र हरेक के पास होना चाहिए।... यह चित्र दिल में प्यार बढ़ाता है।" (मु. 11.1.66 पृ.3 आदि)	Download
4	सभी के घर में यह ल.ना. का चित्र ज़रूर होना चाहिए। कितना एक्युरेट चित्र है। इनको याद करेंगे तो बाबा याद आवेगा। बाबा को याद करो तो यह याद आवेगा।" (मु. 1.1.69 पृ.3 आदि)	Download
5	बाबा कहते हैं जब भी फुर्सत मिले तो ल.ना. के चित्र सामने आकर बैठो। रात को भी यहाँ आकर सो सकते हो। इन ल.ना. को देखते-2 सो जाओ।" (मु. 20.1.74 पृ.2 अंत)	Download
6	राधे-कृष्ण साथ फिर ल.ना. का क्या संबंध है, यह बाप ही आकर समझाते हैं।" (मु. 29.4.71 पृ.1 मध्य)	Download
7	कृष्ण का तो जब स्वयंवर हो ता है, नाम ही बदल जाता है। हाँ, ऐसे कहेंगे लक्ष्मी-नारायण के बच्चे थे। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। तब एक बच्चा हो ता है। फिर उनकी डिनायस्टी चलती है। (मु. 16.8.70 पृ.1 मध्य)	Download
8	" ल.ना. के चित्र के साथ राधे-कृष्ण भी हों तो समझाने में सहज होगा। यह है करेक्ट चित्र। इसकी लिखत भी बड़ी अच्छी है।" (मु. 2.1.73 पृ.3 अंत)	Download

9	ल.ना.के फीचर्स बदलने नहीं चाहिए। नहीं तो कहेंगे इतने फीचर्स होते हैं क्या। फीचर्स एक ही होनी चाहिए।" (मु. 24.2.73 पृ.3 मध्य)	Download
10	" निराकार से क्या निराकारी वर्सा चाहिए? " (मु. 7.10.73 पृ. 4 मध्यांत)	Download
11	ल.ना. को गॉड-गॉडेज़ कहते हैं अर्थात् गॉड द्वारा यह वर्सा पाया है।" (मु. 7.2.76 पृ.1 मध्यांत)	Download
12	इन ल.ना. को निराकार ने ऐसा बनाया।" (मु. 24.5.64 पृ.2 अंत)	Download
13	कहते हैं ना कि गॉड-गॉडेज का राज्य था। भगवती श्री लक्ष्मी, भगवान श्री नारायण का राज्य कहा जाता है। थे तो अब कहाँ गए?... अभी भी वह भिन्न नाम-रूप में यहाँ हैं यह राज़ सभी(अभी) तुम जानते हो । यह बातें समझने से बच्चों को खुशी होनी चाहिए कि बाप हमको पढ़ा ऐसा बना रहे हैं। नम्बरवन हीरो, हीरोइन यह हैं।" (मु. 9.12.71 पृ.1 मध्यांत)	Download
14	यह ल.ना. चैतन्य में थे तो सुख ही सुख था। सब धर्म वाले इनको पूजते, गार्डन ऑफ अल्लाह कहते हैं। " (मु. 2.10.70 पृ.3 मध्य)	Download
15	पहले है परमपिता परमात्मा रचयिता।" (मु. 20.10.73 पृ.1 मध्य)	Download
16	जैसे त्रिमूर्ति का चित्र है, नीचे लिखते हैं दैवी स्वराज्य जन्मसिद्ध अधिकार है। " (मु. 19.3.75 पृ.1आदि)	Download
17	ब्राह्मण भी यहाँ बनना है। देवता भी यहाँ ही बनावेंगे।" (मु. 27.2.76 पृ.3 अंत)	Download
18	जब जन्मसिद्ध अधिकार है तो जन्म लेने से ही प्राप्त है- तब अधिकारी तो बन ही गए ना। (अ.वा.29.1.75 पृ.30 अंत)	Download
19	बाप स्वर्ग का रचयिता है तो ज़रूर स्वर्ग का वरसा ही देगा और देंगे भी ज़रूर नर्क में।" (मु. 8.6.68 पृ.1 आदि)	Download
20	तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण यहाँ (संगमयुग पर) बनना है।" (मु. 25.3.74 पृ.1 अंत)	Download
21	लाल टीका है सूरत की शोभा। चन्दन है आत्मा की शोभा।" (पुरानी अ.वा.6.7.69 पृ.82 अंत)	Download
22	मस्तक में यह स्मृति धारण करो कि मैं आनन्द स्वरूप हूँ- यह मस्तक की चिन्दी हो गई। (अ.वा. 9.1.80 पृ.190 मध्य)	Download

23	इतनी ज़िम्मेवारी के अधिकारी समझ करके चलो। स्व-परिवर्तन, विश्व-परिवर्तन दोनों के ज़िम्मेवारी के ताजधारी सो विश्व के राज्य के ताज अधिकारी होंगे। संगमयुगी ताजधारी सो भविष्य ताजधारी। वर्तमान नहीं तो भविष्य नहीं। वर्तमान ही भविष्य का आधार है। चेक करो और नॉलेज के दर्पण में दोनों स्वरूप देखो - संगमयुगी ब्राह्मण और भविष्य देवपदधारी। दोनों रूप देखो और फिर दोनों में चेक करो- ब्राह्मण जीवन में डबल ताज है वा सिंगल ताज है? एक है पवित्रता का ताज, दूसरा है प्रैक्टिकल जीवन में पढ़ाई और सेवा का। दोनों ताज समान हैं? सम्पूर्ण हैं वा कुछ कम हैं? अगर यहाँ कोई भी ताज अधूरा है, चाहे पवित्रता का, चाहे पढ़ाई वा सेवा का, तो वहाँ भी छोटे-से ताज अधिकारी वा एक ताजधारी अर्थात् प्रजा पद वाले बनना पड़ेगा; क्योंकि प्रजा को भी लाइट का ताज तो होगा अर्थात् पवित्र आत्माएँ होंगी; लेकिन विश्वराजन् वा विश्वमहाराजन् का ताज नहीं प्राप्त होगा। कोई महाराजन्, कोई राजन् अर्थात् राजा, महाराजा और विश्व महाराजा, इसी आधार पर नम्बरवार ताजधारी होंगे। (अ.वा. 12.10.81 पृ.37 आदि)	Download
24	ताज है जिम्मेवारी का। स्वयं की जिम्मेवारी और विश्व की जिम्मेवारी। "(अ.वा. 11.7.74 पृ.102 अंत)	Download
25	जितना बड़ा ज़िम्मेवारी का ताज उतना ही सतयुग में भी बड़ा ताज मिलेगा। " (अ.वा. 11.7.70 पृ.289 अंत)	Download
26	बाबा ने यह भी समझाया है डबल सिरताज यह सिर्फ नाम है। बाकी लाइट का ताज वहाँ कोई रहता नहीं है। यह तो पवित्रता की निशानी है।" (मु. 9.11.69 पृ.2 अंत)	Download
27	कभी स्वप्न में भी अपवित्रता के संकल्प नहीं आये इसको कहा जाता है प्योरिटी की पर्सनैलिटी वाले।" (अ.वा. 8.1.79 पृ.191 आदि)	Download
28	भविष्य का ताज और त़ख्त इस ताज और त़ख्त के आगे कुछ भी नहीं है। " (अ.वा. 6.6.73 पृ.87 मध्यांत)	Download

29	तख्त को तो जानते हो- बाप के दिलतख्तनशीन। लेकिन यह दिल तख्त इतना प्योर है जो इस तख्त पर सदा बैठ भी वही सकते जो सदा प्योर हैं। बाप तख्त से उतारते नहीं; लेकिन स्वयं उतर आते हैं। (अ.वा. 12.12.79 पृ.107 मध्य)	Download
30	बापदादा सभी को विशेष एक गिफ्ट दे रहे हैं। कौन-सी? विशेष एक श्रृंगार दे रहे हैं। वह है "सदा शुभ चिंतक की चिंदी"। ताज के साथ-साथ यह चिन्दी ज़रूर होती है। जैसे आत्मा बिन्दी चमक रही है ऐसे मस्तक के बीच यह चिन्दी की मणी भी चमक रही है।" (अ.वाणी. 19.3.81 पृ.1 अंत)	Download
31	लाल टीका है सूरत की शोभा। चन्दन है आत्मा की शोभा।" (अ.वा. 6.7.69 पृ.82 अंत)	Download
32	मस्तक में यह स्मृति धारण करो कि मैं आनन्द स्वरूप हूँ- यह मस्तक की चिन्दी हो गई।" (अ.वा. 9.1.80 पृ.190 मध्य)	Download
33	जैसे मस्तक में तिलक चमकता है वैसे भाई-2 की स्मृति अर्थात् आत्मिक स्मृति की निशानी मस्तक बीच बिन्दी चमक रही थी।" (अ.वा. 23.3.81 पृ.86 आदि)	Download
34	अमृतवेले सदा अपने मस्तक में विजय का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक लगाओ।... सुहाग की निशानी भी तिलक है। (अ.वा. 21.11.92 पृ.86 आदि)	Download
35	अमृतवेले सदा तीन बिंदियों का तिलक लगाओ। आप भी बिंदी, बाप भी बिंदी और जो हो गया, जो हो रहा है, नथिंग न्यु, तो फुलस्टॉप भी बिंदी। (अ.वा.9.1.93 पृ.165 अंत)	Download
36	बाबा कहते हैं तुमको राजतिलक दे रहा हूँ। मैं स्वर्ग का रचयिता तुमको राजतिलक न दूँगा तो कौन देगा? कहते हैं ना तुलसीदास चन्दन घिसे..... यह बात यहाँ की है। वास्तव में राम शिवबाबा है।" (मु. 5.3.73 पृ.3 आदि)3	Download
37	त़ख्त को तो जानते हो- बाप के दिलत़ख्त नशीन। लेकिन यह दिल त़ख्त इतना प्योर है जो इस त़ख्त पर बैठ भी वही सकते जो सदा प्योर हैं। बाप त़ख्त से उतारते नहीं; लेकिन स्वंय उतर आते हैं। (अ.वा.12.12.79 पृ.107 मध्य)	Download

38	भविष्य का ताज और त़ख्त इस ताज और त़ख्त के आगे कुछ भी नहीं है।" (अ.वा.6.6.73 पृ.87 मध्यांत)	Download
39	नयनों में रूहानियत की चमक, रूहानी नज़र। जिस्म को देखते हुए न देख रूहों को देखने के अभ्यास की चमक थी। रूहानी प्रेम की झलक थी।" (अ.वा. 23.3.81 पृ.86 आदि)	Download
40	दिव्य नयनों द्वारा अर्थात्..... दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त हो ती है।" (अ.वा. 11.11.89 पृ.15 आदि, 18मध्यांत)	Download
41	ऐसे बहुत पुरुष आते हैं- जिनकी स्त्रियाँ नहीं आती हैं। मानती ही नहीं हैं। लिखते हैं कि बाबा हमारी स्त्री तो शूर्पनखा, पूतना है। बहुत तंग करती है। क्या करुँ। बाबा तो लिखते हैं तुम तो कोई कमजोर हो। उनको समझाओ। तुमने तो प्रतिज्ञा की थी कि आज्ञा मानेंगी। तुम अपनी स्त्री को ही वश नहीं कर सकते हो तो विकारों को कैसे वश करेंगे। तुम्हारा फर्ज़ है स्त्री को अपने हाथ में रखना। प्यार से समझाना। (मु. 24.4.72 पृ.2 आदि)	Download
42	होंठों पर प्रभु प्राप्ति आत्मा और परमात्मा के महान मिलन की और सर्व प्राप्तियों की मुस्कान...। चेहरे पर मात-पिता और श्रेष्ठ परिवार से बिछुड़े हुए कल्प बाद मिलने के सुख की लाली...। (अ.वा.23.3.81 पृ.86 आदि)	Download
43	नर और नारी दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं वह ऐसे हर्षित रहते हैं। तो हर्षित रहने का साधन क्या हुआ? ज्ञान का सिमरण करना। जो जितना ज्ञान को सिमरण करते हैं वह उतना ही हर्षित रहते हैं।" (अ.वा. 16.6.72 पृ.309 अंत)	Download
44	आवाज़ से हँसना न है। ल.ना. को हर्षितमुख कहा जाता है। हर्षितमुख रहना और हँसना अलग बात है। हर्षित मुख रहने से वह गुप्त खुशी रहती है। आवाज़ से हँसना बुरी बात है। हर्षित रहना सभी से अच्छा है। खिल-2 करना भी एक विकार है। " (मु. 8.9.73 पृ.3 अंत)	Download
45	कानों द्वारा भी आनन्द स्वरूप बनने की बातें सुनते रहना, यह कानों का श्रृंगार है। " (अ.वा. 9.1.80 पृ.190 अंत)	Download

46	मुख द्वारा अर्थात् गले में भी आनन्द दिलाने की बातें हों- यह गले की माला हो गई।" (अ.वा. 9.1.80 पृ.190 मध्य)	Download
47	हाथों द्वारा अर्थात् कर्म में भी आनन्द स्वरूप की स्थिति हो -ये हाथों के कंगन हो गए।" (अ.वा. 9.1.80 पृ.190 मध्य)	Download
48	शक्तियों के अलंकार, और शक्तियों की ललकार और शक्तियों के किस कार्य का गायन है।--- घुंगरू डालकर असुरों के ऊपर नाचना है। नाचने से क्या होता है? जो भी चीज़ होगी वह दबकर ख़त्म हो जावेगी। निर्भयता और विनाश की निशानी यह घुंगरू की झंकार है। (अ.वा. 4.11.76 पृ.2)	Download
49	शक्तियों का या गोपिकाओं का यादगार है, खुशी में नाचना। पाँव में घुंघरू डालकर नाचते हुए दिखाते हैं। जो सदा खुशी में रहते उनके लिए कहते- खुशी में नाच रहा है। नाचते हैं तो पांव ऊपर रखते हैं। ऐसे ही जो खुशी में नाचने वाले होंगे उनकी बुद्धि ऊपर रहेगी। देह की दुनिया व देहधारियों में नहीं; लेकिन आत्माओं की दुनिया में, आत्मिक स्थिति में होंगे।" (अ.वा. 21.5.77 पृ.168 अंत)	Download
50	पाँव द्वारा आनन्द स्वरूप बनाने की सेवा की तरफ पाँव हों अर्थात् कदम-2 आनन्द स्वरूप बनने और बनाने को ही उठें, यह पाँव का श्रृंगार है।" (अ.वा. 9.1.80 पृ.190 अंत)	Download
51	जैसे बाप निराकार से आकारी वस्त्र धारण करते हैं। आकारी और निराकारी बाप-दादा बन जाते हैं- आप भी आकारी फरिश्ता ड्रेस पहनकर आओ, चमकीली ड्रेस पहनकर आओ, तब मिलन होगा। ड्रेस पहनना नहीं आता है क्या? ड्रेस पहनो और पहुँच जाओ। यह ऐसी ड्रेस है जो माया के वॉटर या फायर प्रूफ है। " (अ.वा.28.11.79 पृ.59 आदि)	Download

52	बाप-दादा द्वारा भिन्न-भिन्न टाइटिल्स बच्चों को मिले हुए हैं। तो भिन्न-भिन्न टाइटिल्स की स्थिति रूपी ड्रेस और भिन्न-भिन्न गुणों के श्रृंगार के सेट हैं।...उसी टाइटिल की स्थिति में स्थित होना अर्थात् ड्रेसेज़ को धारण करना। कभी विश्व-कल्याणकारी की ड्रेस पहनो, कभी मास्टर सर्व शक्तिवान की और कभी स्वदर्शन चक्रधारी की। जैसा समय, जैसा कर्तव्य वैसी ड्रेस धारण करो।...अब एक सेट समझ लिया? पूरा ही सेट ही धारण कर लिया? ऐसे अलग-अलग समय पर अलग-अलग सेट धारण करो।.... तो आपके इतने श्रेष्ठ श्रृंगार के सेट हैं। वह धारण क्यों नहीं करते हो ? पहनते क्यों नहीं हो ? इतनी सब भिन्न-भिन्न प्रकार की सुन्दर ड्रेसेज़ छोड़कर देह-अभिमान के स्मृति की मिट्टी वाली ड्रेस क्यों पहनते हो ? " (अ.वा.9.1.80 पृ.190 अंत ,191आदि)	Download
53	सतयुग में तो बुद्धू होंगे। इन ल.ना. को कुछ भी नॉलेज नहीं है।" (मु. 17.4.71 पृ.3 अंत)	Download
54	बाप समझाते हैं तुम कितने बेसमझ बन गए हो । अब समझदार बनाते हैं। यह (ल.ना.) समझदार हैं, तब तो विश्व के मालिक हैं। बेसमझ तो विश्व के मालिक हो न सकें।" (मु. 29.7.70 पृ.3 मध्यादि)	Download
55	तुम जानते हो कि अभी हम ईश्वरीय संतान हैं, फिर हम दैवी संतान बनेंगे तो डिग्री कम हो जावेगी। यह (ल.ना.) भी डिग्री कम है; क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में है। ज्ञान बिगर मनुष्य को क्या कहेंगे? अज्ञानी। इन (ल.ना.) को अज्ञानी नहीं कहेंगे। इन्होंने ज्ञान ही से यह पद पाया है। (मु. 4.6.67 पृ.3 अंत)	Download
56	अब हीरे जैसा जन्म तो सब कहेंगे इन ल.ना. का ही है।" (मु. 5.2.67 पृ.1 आदि)	Download
57	तुम (सब) बता देंगे इन ल.ना. का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ। फिर कल 9 वर्ष कम 5000 वर्ष।" (सन् 66 की वाणी है) (मु. 4.3.70 पृ.3 मध्य)	Download
58	पुरुषोत्तम संगमयुग पर हीरे जैसा जीवन बनता है। इनको (ल.ना.) को हीरे जैसा नहीं कहेंगे। तुम्हारा हीरे जैसा जन्म है। तुम हो ईश्वरीय संतान, ... यह दैवी संतान।" (मु. 28.4.68 पृ.2 आदि)	Download

59	नारायण से पहले तो श्रीकृष्ण है, फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो नर से नारायण बने? क्यों नहीं कहते हो नर से कृष्ण बने? पहले-2 नारायण थोड़े ही बनेंगे। पहले तो श्रीकृष्ण प्रिन्स ही बनेंगे ना।... बाप कहते हैं अभी तुम (हम बच्चे) नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले हो । गाया भी जाता है बेगर टू प्रिन्स।" (मु. 16.7.68 पृ.3 मध्य)	Download
60	ल.ना. ने ज़रूर आगे (2018) जन्म में संगम पर राज्य लिया है। लक्ष्मी-नारायण ही 84 जन्म भोग अब इस अंतिम जन्म में हैं। ल.ना. को राज्य किसने दिया? देने वाला कोई तो होगा ना। तो यह सिद्ध होता है ज़रूर भगवान (ने) दिया होगा; पंरतु कैसे दिया। सतयुग आदि में यह महाराजा-महारानी कैसे बने यह बाप बैठ समझाते हैं।" (मु. 21.4.72 पृ.3 आदि)	Download
61	कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का नाम ही नहीं। उनका बाप कहाँ है? ज़रूर राजा का बच्चा होगा ना। ....कृष्ण जब है तब थोड़े ही पतित रहते हैं। जब वह बिल्कुल खलास हो जाते हैं तब यह गद्दी पर बैठते हैं, अपना राज्य ले लेते हैं। तब से ही उनका संवत् शुरू होता है। लक्ष्मी-नारायण से ही संवत् शुरू होता है।" (मु. 29.1.71 पृ.3 अंत)	Download
62	हमारा नया वर्ष तो हो गा 1-1-1। एक तारीख, एक मास, एक वर्ष।" (मु. 22.10.68 पृ.3 मध्य)	Download
63	दिन-प्रतिदिन इम्प्रूवमेंट बहुत होती जावेगी। कहीं बच्चे चित्रों में तिथी-तारीख याद लगाना भूल जाते हैं। ल.ना. के चित्र में तिथी-तारीख ज़रूर होनी चाहिए।" (मु. 3.6.67 पृ.1 मध्य)	Download
64	यह अभी जानते हैं हम सो (संगमयुगी) ल.ना. बनते हैं। हम सो राम-सीता बनेंगे।" (मु. 25.5.72 पृ.3 मध्यांत)	Download
65	सतयुग में ल.ना. का राज्य है। फिर वही त्रेता में भी राज्य करते हैं।" (मु. 9.11.72 पृ.3 मध्यादि)	Download
66	सतयुग को रामपुरी कहा जाता है। अक्षर कहते हैं; परंतु यह नहीं जानते कि राम कौन है? " (मु.4.3.70 पृ.2 अंत)	Download
67	जिस नाम से (रामराज्य की) स्थापना होती तो ज़रूर उनका नाम ही रखेंगे।" (मु. 25.5.74 पृ.1 मध्य)	Download

68	रामराज्य है सतयुग (के) आदि में।" (मु. 2.8.76 पृ.3 मध्य)	Download
69	जब विश्वराजन बनेंगे तो विश्व का बाप ही कहलाएँगे ना। विश्व के राजन विश्व के बाप हैं ना। (अ.वा.6.8.70 पृ.303 अंत)	Download
70	विश्व राजन बनना व सतयुगी राजन बनना इसमें भी अंतर है।" (अ.वा.28.1.85 पृ.146 मध्य)	Download
71	राम भी वास्तव में जगतजीत था ना। (मु. 15.1.72 पृ.1 मध्य)	Download
72	ऊँच-ते-ऊँच बाप से ऊँच-ते-ऊँच वरसा मिलता है। वह (वरसा) है ही भगवान (भगवती का)। फिर सेकेंड में हैं ल.ना. विश्व के मालिक।" (मु. 8.1.67 पृ.2 मध्यांत)	Download
73	भगवान (शिव) ने ज़रूर भगवती-भगवान पैदा किये। (मु. 24.5.64 पृ.2 अंत)	Download
74	वह है ही वण्डर ऑफ वर्ल्ड स्वर्ग। पैराडाइज़। यहाँ सात वण्डर्स कहते हैं ना। यह हैं मायावी। ईश्वरीय वण्डर है स्वर्ग। वह स्वर्ग का वण्डर अभी न है तो माया के वण्डर्स बनते हैं।" (मु. 9.2.68 पृ.2 अंत)	Download
75	स्वर्ग को भी वण्डर कहा जाता है ना। कितना शोभनिक है। माया के सात वण्डर्स हैं। बाप का है एक वण्डर। वह सात वण्डर्स एक पूर में रखो और यह एक पूर में रखो तो भी यह भारी हो जावेगा।" (मु. 5.12.68 पृ.2 मध्य)	Download
76	तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो । तुम्हारे जैसा इंजीनियर, ऑफिसर कोई हो न सके।" (मु. 23.2.68 पृ.4 अंत)	Download

77	1. सतयुग की दिनचर्या में प्रकृति के नैचुरल साज जगायेंगे लेकिन संगमयुगी ब्राह्मणों के आदिकाल-अमृतवेले से श्रेष्ठता देखो तो कितनी महान है। वहाँ प्रकृति का साधन है और संगमयुग पर आदिकाल अर्थात् अमृतवेले कौन जगाता है? स्वयं प्रकृति का मालिक भगवान तुम्हें जगाता है। 2. मधुर साज़ कौन-सा सुनते हो ? बाप रोज़"बच्चे - मीठे बच्चे" कहकर बुलाते हैं। यह नैचुरल साज़, ईश्वरीय साज़ सतयुगी प्रकृति के साज़ से कितना महान है। उसके अनुभवी हो ना? तो सतयुगी साज़ महान हैं या ये संगमयुग के साज़ महान हैं? साथ-2 सतयुग के संस्कार और प्रारब्ध बनाने व भरने का समय है। संस्कार भरते हैं, प्रारब्ध बनती है। इसी संगमयुग पर ही सब होता है। 3. वहाँ सतोप्रधान अति स्वादिष्ट रस वाले वृक्ष के फल खाएंगे। यहाँ वृक्षपति द्वारा सर्वसंबंध के रस, सर्वप्राप्ति-संपन्न प्रत्यक्ष फल खाते हो । 4. वह गोल्डन एज का फल है और यह डायमन्ड एज का फल है, तो श्रेष्ठ कौन-सा हुआ? 5. वहाँ दास-दासियों के हाथ में पलेंगे यहाँ बाप के हाथों में पल रहे हो । 6. वहाँ महान आत्माएँ माँ-बाप होंगे, यहाँ परमात्मा माता-पिता हैं। 7. वहाँ रतन जड़ित झुलों में झूलेंगे यहाँ सबसे बड़े-से-बड़ा झूला कौन-सा है, वह जानते हो ? बाप की गोदी झूला है। बच्चे के लिए सबसे प्यारा झूला माता-पिता की गोदी है। सिर्फ़ एक झूला भी नहीं, भिन्न-2 झूलों में झूल सकते हो। अतीन्द्रिय सुख का झूला, खुशियों का झूला।--- 8. वहाँ रत्नों से खेलेंगे, खिलौनों से खेलेंगे, आपस में खेलेंगे लेकिन यहाँ बाप कहते हैं, सदा मेरे से, जिस भी रूप में चाहो उस रूप में खेल सकते हो । सखा बन करके खेल सकते हो, बंधू बन खेल सकते हो । बच्चा बन करके भी खेल सकते हो । बच्चा बना करके भी खेल सकते हो । ऐसा अविनाशी खिलौना तो कभी नहीं मिलेगा। जो न टूटेगा, न फूटेगा और खर्चा भी नहीं करना पड़ेगा। 9. वहाँ आराम से गदेलों पर सोयेंगे, यहाँ याद के गदेलों पर सो जाओ। 10. वहाँ निन्द्रा-लोक में चले जाते हो; लेकिन संगम पर बाप के साथ सूक्ष्मवतन में चले जाओ। 11. वहाँ के विमानों में सिर्फ़ एक लोक का सैर कर सकेंगे और अब बुद्धि रूपी विमान द्वारा तीनों लोगों का सैर कर सकते हो । 12. वहाँ विश्वनाथ कहलायेंगे और अब त्रिलोकीनाथ हो । 13. वहाँ दो नेत्री होंगे, यहाँ तीन नेत्री हो । 14. संगमयुग के अंतर में अर्थात् नालेजफुल, पावरफुल, ब्लिसफुल इसके अंतर में वहाँ क्या बन जायेंगे? रॉयल बुद्धू बन जायेंगे। 15. दुनिया के हिसाब से परमपूज्य होंगे, विश्व द्वारा माननीय होंगे; लेकिन नालेज के हिसाब से महान अंतर पड़ जायेगा। 16. यहाँ तो गुडमार्निंग, गुडनाइट बाप से करते हो और वहाँ आत्माएँ आत्माओं से करेंगी। 17. वहाँ विश्व राज्य-अधिकारी होंगे, राज्य-कर्ता होंगे और यहाँ विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी हो । तो श्रेष्ठ कौन हुए? सतयुगी बातें तो सुनकर सदा खुशी स्वरूप बन जाओ। 18. वहाँ वैराइटी प्रकार का भोजन खायेंगे और यहाँ ब्रह्मा भोजन खाते हो जिसकी महिमा देवताओं के भोजन से भी अति श्रेष्ठ है। तो सदा सतयुगी प्रारब्ध और वर्तमान समय के महत्व और प्राप्ति को साथ-2 रखो। (अ.वाणी 7.1.80 पृ.753, 754, 755)	Download
78	ऐसे दुनिया में जाते हैं जहाँ शेर बकरी इकट्ठे जल पीते हैं।" (मु. 8.5.70 पृ.3 अंत)	Download
79	बाबा कहे यह काम न करो, मानेंगे नहीं। ज़रूर उल्टा काम करके दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें तो हर प्रकार की(के) चाहिए ना।" (मु.10.12.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
80	विश्व का राजा वह बनेगा जो विश्व के (की) हर आत्मा से संबंध जोड़ेंगे और सहयोगी बनेंगे। जैसे बापदादा विश्व के स्नेही और सहयोगी बने, वैसे बच्चों को भी फॉलो करना है, तब विश्व के महाराजन की जो पदवी है उसमें आने के अधिकारी बन सकते हो ।" (अ.वा. 28.10.76 पृ.2 आदि)	Download

81	देहीअभिमानी बनने बिगर राजाएँ बन न सकेंगे।" (मु. 3.3.69 पृ.2 अंत)	Download
82	राज्य अधिकारी बनना है तो स्नेह के साथ पढ़ाई की शक्ति अर्थात् ज्ञान की शक्ति, सेवा की शक्ति, यह भी आवश्यक है। (अ.वा. 18.1.85 पृ.132 मध्य)	Download
83	जो महारथी कहलाए जाते हैं उनकी प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल साथ-2 होना चाहिए।... महारथियों की निशानी होगी प्रैक्टिस की और प्रैक्टिकल हुआ। घोड़ेसवार प्रैक्टिस करने के बाद प्रैक्टिकल में आवेंगे और प्यादे प्लैन्स ही सोचते रहेंगे।" (अ.वा. 26.3.70 पृ.228 मध्य)	Download
84	महावीर बच्चों की विशेषता यह है कि पहले याद को रखते, फिर सेवा को रखते। घोड़ेसवार और प्यादे पहले सेवा, पीछे याद। इसीलिए फर्क पड़ जाता है। पहले याद, फिर सेवा करें तो सफलता है। पहले सेवा को रखने से सेवा में जो भी अच्छा-बुरा होता है उसके रूप में आ जाते हैं और पहले याद को रखने से सहज ही न्यारे हो सकते हैं।" (अ.वा. 29.4.84 पृ.281 मध्य)	Download
85	इसी तरह से साहूकार प्रजा भी होगी। तो यहाँ भी कई राजे नहीं बने हैं; लेकिन साहूकार बने हैं; क्योंकि ज्ञान रत्नों का खजाना बहुत है, सेवा कर पुण्य का खाता भी जमा बहुत है; लेकिन समय आने पर स्वयं को अधिकारी बनाकर सफलतामूर्त बन जायँ वह कंट्रोलिंग पावर और रूलिंग पावर नहीं है अर्थात् नॉलेजफुल हैं; लेकिन पावरफुल नहीं हैं। शस्त्रधारी हैं; लेकिन समय पर कार्य में नहीं ला सकते हैं। स्टॉक है; लेकिन समय पर न स्वयं यूज़ कर सकते और न औरों को यूज़ करा सकते हैं। विधान आता है; लेकिन विधि नहीं आती। ऐसे भी संस्कार वाली आत्माएँ हैं अर्थात् साहूकार संस्कार वाली हैं। जो राज्य अधिकारी आत्माओं के सदा समीप के साथी ज़रूर होते हैं; लेकिन स्व-अधिकारी नहीं होते।" (अ.वा. 14.1.82 पृ.238 अंत, 239 आदि)	Download
86	जो प्रजा में साहूकार बनने होंगे वह ज्ञान भी सुनेंगे, बीज भी बोयेंगे; लेकिन पढ़ाई ज्यादा नहीं पढ़ेंगे। पवित्र रहेंगे। (मु.31.7.73 पृ.2 आदि)	Download

87	कोई भी कर्म-इन्द्रियों के वशीभूत होना अर्थात् रूलिंग पावर नहीं है, जिससे कि "स्व" पर राज्य नहीं कर सकता।... जब स्वयं पर प्रजा का राज्य है और कर्म-इन्द्रियाँ प्रजा हैं तो जब तक प्रजा का राज्य है तो समझो प्रजा बनने वाले हैं।" (अ.वा. 11.10.75 पृ.175 अंत)	Download
88	बार-2 कोई न कोई कर्म-इन्द्रियों के वा देहधारियों और देह के सम्पर्क से उन्हों के दास बन जाते हैं और उदास हो जाते हैं तो समझो दास-दासी बनने वाले हैं।" (अ.वा. 11.10.75 पृ.176 मध्यादि)	Download
89	जो आश्चर्यवत् भागन्ति होते वे तो प्रजा में चंडाल बनेंगे; परंतु जो यहाँ रह बहुत शैतानी, चोरी-चकारी आदि करते हैं तो वो रॉयल घराने के चंडाल बनते हैं। फिर भी पिछाड़ी में उनको ताज-पतलून मिल जाती है।... यहाँ गोद तो लेते हैं ना।" (मु. 9.8.64 पृ.4 आदि)	Download
90	बाप कहते हैं ना जो जाकर मेरी निंदा करते हैं, ग्लानि करते हैं, हाथ छोड़जाते हैं वो प्रजा में जाकर चाण्डाल बनते हैं।" (मु. 10.7.67 पृ.3 आदि)	NA
91	कब क्रोध न करना है। उसी समय तुम ब्राहमण नहीं, चाण्डाल हो; क्योंकि क्रोध का भूत है। (मु. 7.5.77 पृ.3मध्यांत)	Download
92	पढ़ाई से कब रूठना नहीं है। कोई से अनबनत हो तो भी पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए। पढ़ाई से लड़ने-झगड़ने का ताल्लुक़ नहीं। पढ़ेंगे-लिखेंगे होंगे नवाब। लड़ेंगे-झगड़ेंगे तो नवाब थोड़े बनेंगे। वह तो फिर तमोप्रधान चलन हो जाती है।" (मु. 5.3.69 पृ.2 आदि)	Download
93	तुम बच्चों को रेगुलर बनना है। बापदादा रेगुलर किसको कहते हैं। रेगुलर उनको कहा जाता है जो सुबह से लेकर रात तक जो भी कर्तव्य करता है वह श्रीमत के प्रमाण करता है। सबमें रेगुलर।--- रेगुलर चीज़ अच्छी होती है। जितना जो रेगुलर होता है उतना दूसरों की सर्विस ठीक कर सकता है। " (अ.वा. 23.10.70 पृ.316 अंत)	Download

94	जहाँ तक जीना है अमृत पीना है, शिक्षा को धारण करना है। अपसेन्ट तो कब न होना चाहिए। यहाँ-वहाँ से ढूँढ़कर, कोई से लेकर भी मुरली पढ़नी चाहिए। बाबा जानते हैं- बहुत बच्चे हैं, अच्छे-2 नंबरवन में जिनको गिनते हैं, वह भी मुरली मिस कर देते हैं। अपना ही घमण्ड आ जाता है। अरे, भगवान बाप पढ़ाते हैं, (उ)समें तो एक दिन भी मिस न होना चाहिए। ऐसी-2 गुह्य प्वॉइन्ट्स निकतली(निकलती) हैं, जो तुम्हारा वा किसका भी कपाट खुल सकते हैं।" (मु.16.6.68 पृ.3 आदि)	Download
95	यहाँ के नम्बरवन रेगुलर और पंक्चुअल गॉडली स्टूडेन्ट वहाँ भी साथ-2 पढ़ेंगे; क्योंकि ब्रह्मा बाप नम्बरवन गॉडली स्टूडेन्ट है।" (अ.वा. 8.1.79 पृ.189 मध्य)	Download
96	प्रिन्स का ज़रूर राजा-महाराजा पास ही जन्म होगा।" (मु. 21.4.71 पृ.3 मध्य)	NA
97	कोई ऊपर से नई आत्माएँ तो नहीं आईं, जिनको भगवान ने राजाई दे दी। नहीं। इन्हों को पुराना से नया बनाया हुआ है। जिसको रिज्युविनेट वा काया कल्पतरू भी कहा जाता है।" (मु. 11.3.73 पृ.2 मध्य)	Download
98	प्रकृति को भी पावन बनाना है, तब ही विश्व परिवर्तन होगा।" (अ.वा. 25.5.73 पृ.72 अंत)	Download
99	ऐसी कोई बात नहीं जो तुमसे लागू नहीं होती है। तुम सर्जन भी हो, सर्राफ भी हो, धोबी भी हो। सब खासियतें (विशेषताएँ) तुम्हारे में आ जाते हैं।" (मु. 14.4.68 पृ.3 अंत)	Download
100	तुम वण्डरफुल हो ना। सारे भारत को ही तुम निरोगी बनाते हो। वह डॉक्टर लोग भी तुम्हारे आगे क्या हैं।" (मु. 23.2.68 पृ.4 अंत)	Download
101	नानक ने भी कहा न- मूत पलीती कपड़ धोय। लक्ष्य सोप है न! बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र (आत्मा और शरीर) कितना शुद्ध बनाता हूँ। ऐसा धोबी कब देखा? " (मु. 21.5.64 पृ.3 अंत)	Download

102	वह बाप भी है, नइया को पार लगाने वाला खेवइया भी है।... क्या शरीर को ले जावेंगे? अभी तुम बच्चे समझते हो बरोबर हमारी आत्मा को पार ले जाते हैं।... इनको वस्त्र भी कहते हैं, नइया भी कहते हैं।" (मु. 3.11.68 पृ.1 मध्यादि, 2 मध्यांत)	Download
103	बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। जैसे सर्प पुरानी खल आपे ही छोड़ देते हैं और नई खल आ जाती है। उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे एक शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करती है। नहीं। खल बदलने का एक ही सर्प का मिसाल है। वह खल उसको देखने में आते हैं। जैसे कपड़ा उतारा जाता है वैसे सर्प भी खल छोड़देता। दूसरी मिल जाती है। सर्प तो जीता ही रहता है। ऐसे भी नहीं सदैव अमर रहता है। द॑/तीन खल बदली कर फिर मर जावेंगे।" (मु.18.7.70 पृ.2 अंत)	Download
104	ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहते? यहाँ तो बाप ने कहा है तुम इस शरीर को भी भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखलाते हैं। (मु.25.8.74 पृ.2 आदि)	Download
105	यह तो बहुत ही बड़ा वैल्युएबल शरीर है। इस शरीर द्वारा ही आत्मा को बाप से (विश्व की बादशाही की) लॉटरी मिलती है। (मु.8.10.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
106	इस योगबल से तुम कितने कंचन बनते हो । आत्मा और काया दोनों कंचन बनती है।" (मु.5.12.68 पृ.1 अंत)	Download
107	विनाश होने बाद थोड़े बचते हैं। उनमें पुण्यात्मा भी रहते हैं। फिर हिसाब-किताब चुक्तू कर सतयुग में तो सब पावन होंगे। संगम पर कुछ पतित कुछ पावन रहते हैं, फिर पतित खलास हो फिर पावन ही पावन रहेंगे।" (मु. 7.6.64 पृ.4 आदि)	Download
108	अभी तो दुनिया में 500 करोड़ मनुष्य हैं। सतयुग में जब इन ल.ना. का राज्य हो ता है तो वहाँ 9 लाख हो ते हैं।" (मु. 4.9.69 पृ.3 आदि)	Download
109	पहले-2 है देवी-देवताओं की संख्या। पहले-2 आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ल.ना. आवेंगे अपनी प्रजा सहित। और कोई प्रजा सहित नहीं आते। वो एक आवेगा, फिर तीसरा आवेगा।" (मु. 17.5.65 पृ.1 मध्यांत)	Download

110	राम-(सीता) को भी सतयुग के पहले ल.ना. का दास-दासी बनना पड़े; क्योंकि ल.ना. फुल पास हुए। वो फेल हुआ (यज्ञ में); इसलिए उनको क्षत्रिय कहते हैं। (मु. 20.5.64 पृ.3 अंत)	Download
111	भल पहले अनपढ़, पढ़े-लिखे आगे भरी ढोते हैं; परन्तु महाराजा-महारानी तो बनेंगे न।" (मु. 8.8.73 पृ.1 मध्य)	Download
112	बाप बच्चों का ओबीडियेंट सर्वेंट हो ता है ना। बच्चों को पैदा कर, उनकी सम्भाल, पढ़ा..., बड़ा बनाकर, फिर बूढ़ा हो ता है तो सारी मिल्कियत बच्चों को देकर खुद.... वानप्रस्थी बन जाते हैं।.... तो बाप-माँ बच्चों के सर्वेंट ठहरे ना।" (मु.16.10.68 पृ.1 अंत)	Download
113	सतयुग में तुम ही आपस में भाई-बहन थे।... दूसरा को ई सम्बंध नहीं।" (मु. 4.5.74 पृ.3 अंत)	Download
114	बच्चा किस आयु में आवेगा। वहाँ तो सभी रेग्युलर चलता है ना। वह तो आगे चल कर मालूम पड़ेगा। ऐसे तो नहीं 15/20 वर्ष में कोई बच्चा होगा, जैसेकि यहाँ होता रहता है। नहीं। वहाँ आयु ही 150 वर्ष हो ती है, तो बच्चा कब आवेगा। जब फुल जवानी हो ती है। आधा लाइफ से थोड़ा आगे। उस समय बच्चा आता है; क्योंकि वहाँ आयु बड़ी होती है। एक ही तो बच्चा आना है। फिर बच्ची भी आनी है। कायदा होगा। पहले बच्चा या बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहते हैं पहले बच्चे की ही आत्मा आनी चाहिए। पहले मेल, पीछे फीमेल।" (मु. 29.6.68 पृ.1 अंत)	Download
115	राधा कुमारी है, कृष्ण कुमार। तो कृष्ण (को) स्वामी कैसे कहेंगे? जब स्वयंवर बाद ल.ना. बनें तब स्वामी कहा जाए।" (मु. 29.9.77 पृ.2 मध्य)	Download
116	इस समय का प्यार भी अशुद्ध है। देवी-देवताओं का प्यार तो बहुत शुद्ध होगा न। मनुष्य समझते है प्यार विकार का ही होता है। परन्तु प्यार तो अनेक प्रकार के हो ते हैं। मोर डेल का भी प्यार है न। आंसू का जल है जिससे बच्चे का शरीर बनता है। एक बूँद से जानवर का गर्भ हो सकता है तो पता नहीं और भी कोई प्यार की रीति हो । तो ऐसे क्यों कहना चाहिए देवताएँ ज़रूर विकार से ही जन्म लेते हैं।" (मु.15.9.73 पृ.1 मध्य)	Download

117	पूछते हैं बच्चे कैसे पैदा होंगे? बोलो कृष्ण को सम्पूर्ण निर्विकारी कहते हो ना। तो जरूर सम्पूर्ण निर्विकारी का बच्चा होगा। योगबल से पैदाइश होगी। देखो पपीते का झाड़ है। मेल फिमेल एक दो के बाजू में होने से बच्चा पैदा हो जाता है। मेल फिमेल बाजू में न होंगे तो बच्चा होगा नहीं। वन्डरफुल बात है ना। तो वहाँ क्यों नहीं योगबल से बच्चा हो सकता है। जैसे मोर डेल का मिसाल है। उनको कहते ही हैं नेशनल बर्ड। प्रेम के आँसू से गर्भ हो जाता है। यह विकार तो नहीं हुआ ना। (मु. 2.12.71 पृ.3 आदि)	Download
118	वहाँ यह साला, भान्जा, चाचा आदि बहुत (सम्बंध) नहीं होते। सम्बंध बहुत हल्के होते हैं। " (मु.12.10.74 पृ.3 मध्यांत)	Download
119	सतयुग में भी तुम ही आपस में भाई-बहन थे।... दूसरा कोई सम्बंध नहीं। " (मु.22.5.69 पृ.3 अंत)	Download
120	सतयुग, त्रेता में तो होता ही है एक बच्चा, एक बच्ची। पिछाड़ी में करके थोड़ी गड़बड़ होती है। परन्तु विकार की बात नहीं। (मु.12.12.76 पृ.1)	Download
121	सतयुग में इतने बच्चे होते ही नहीं। करके मुश्किल से कोई को 3 हो । पीछे आस्ते-2 बच्चे जास्ती होते हैं। (मु. 23.9.71 पृ.2 आदि)	Download
122	सतयुग का अर्थ ही है, जो भी प्रकृति के सुख हैं, आत्मा के सुख हैं,बुद्धि के सुख हैं, मन के सुख हैं, सम्बन्ध के सुख हैं, जो भी सुख होते वह सब हाजिर हैं। तो अब सोचो प्रकृति के सुख क्या होते हैं, मन का सुख क्या होता है, सम्बन्ध का सुख क्या होता है- ऐसे इमर्ज करो। जो भी आपको इस दुनिया में अच्छे-ते-अच्छा दिखाई देता है- वह सब चीजें पवित्र रूप में सम्पन्न रूप में, सुखदायी रूप में वहाँ होंगी। चाहे धन कहो, तन कहो, मन कहो, मौसम कहो, सब प्राप्ति जो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ है उसको ही सतयुग कहा जाता है। एक बहुत अच्छे-ते-अच्छी सुखदायी सम्पन्न फैमली समझो; वहाँ राजा प्रजा समान मर्तबे होते हुए भी परिवार के रूप में चलता है। यह नहीं कहेंगे कि यह दास-दासी हैं। नम्बर होंगे, सेवा होगी; लेकिन दासी है इस भावना से नहीं चलेंगे। जैसे परिवार के सब संबंध खुश मिज़ाज, सुखी परिवार, समर्थ परिवार, जो भी श्रेष्ठता है वह सब है। दुकानों में भी खरीदारी करेंगे तो हिसाब-किताब से नहीं। परिवार की लेन-देन के हिसाब से कुछ देंगे कुछ लेंगे। गिफ्ट ही समझो। जैसे परिवार में नियम होता है- किसके पास ज़्यादा चीज़ होती है तो सभी को बाँटते हैं। हिसाब-किताब की रीति से नहीं। कारोबार चलाने के लिए कोई को ड्यूटि मिली हुई है, कोई को कोई। जैसे यहाँ मधुबन में है ना। कोई कपड़े सम्भालता, को ई अनाज सम्भालता, कोई पैसे तो नहीं देते हो ना। लेकिन चार्ज वाले तो हैं ना। ऐसे वहाँ भी होंगे। सब चीजें अथाह हैं, इसलिए जी हाजिर। कमी तो है ही नहीं। जितना चाहिए जैसा चाहिए वह लो। सिर्फ़ बिज़ी रहने का यह एक साधन है। वह भी खेल 2 है। कोई हिसाब-किताब किसको दिखाना तो है नहीं। यहाँ तो संगम है ना। संगम माना एकानामी। सतयुग माना- खाओ, पिओ, उड़ाओ। इच्छा मात्रम् अविद्या है। जहाँ इच्छा होती वहाँ हिसाब-किताब करना होता। इच्छा के कारण ही नीचे ऊपर होता है। वहाँ इच्छा भी नहीं, कमी भी नहीं। सर्व प्राप्ति हैं और सम्पन्न भी हैं तो बाकी और क्या चाहिए। ऐसे नहीं अच्छी चीज़ लगती तो ज़्यादा ले ली। भरपूर होंगे। दिल भरी हुई होगी। सतयुग में तो जाना ही है ना। प्रकृति सब सेवा करेगी। (अ.वा.14.1.84 पृ.106-107)	Download

123	सिवाय एक धर्म के और कुछ भी न रहेगा। सिर्फ भारत ही रहेगा। अगर होंगे भी तो पहाड़ ही होंगे। शायद पहाड़ भी ढक जाते होंगे। अगर जलमई कहें तो क्या इतने2 ऊँचे-2 पहाड़ियाँ हैं हिमालय आदि क्या यह सब चले जावेंगे? इतना पानी ऊँच चढ़ जावेगा। वहाँ तो तुमको कहाँ पहाड़ों आदि भी जाने की दरकार नहीं रहती। ऐसे नहीं तुम कहाँ घूमने जावेंगे। कहाँ भी जाने की दरकार नहीं। कोई भी एक्सीडेंट आदि नहीं।" (मु.9.2.68 पृ.2 मध्यांत)	Download
124	वह सृष्टि ही नई बन जावेंगी। वहाँ कितने अच्छे-2 फल-फूल होते हैं। हर चीज़ वहाँ अच्छी होती है। गंद करने, दुख देने वाली कोई चीज़ होती ही नहीं। इसलिए उनको स्वर्ग कहा जाता है।" (मु.3.7.73 पृ.2 मध्य)	Download
125	नई दुनिया को ही टावर ऑफ सुख कहा जाता है। वहाँ तो मैले आदि कोई चीज़ होती ही नहीं। ऐसी मिट्टी ही नहीं होती तो (जो) मैला हो। न ऐसी हवाएँ ही लगती हैं, जो मकानों को ख़राब करें। कचड़ा वहाँ होता ही नहीं। स्वर्ग की तो बहुत महिमा है। इसके लिए पुरुषार्थ करना है। " (मु.9.2.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
126	पक्षी जनावर आदि सभी सतोप्रधान होते हैं। वह भी निडर बन जाते। यहाँ तो बुलबुल अथवा चिडियाँ मनुष्य को देखकर भागते हैं। वहाँ तो शेर-बकरी को भी डर नहीं रहता। तो ऐसे-2 अच्छे पक्षी तुम्हारे आगे घूमते-फिरते रहेंगे। वह भी कायदेसिरे। ऐसे नहीं कि घर के अंदर घुस आवेंगे। गंद करके जाएँ, नहीं। बहुत कायदेवान दुनिया बन जाती है।" (मु. 12.8.68 पृ.1 मध्य)	Download
127	स्वर्ग में क्या-2 होगा। वहाँ थोड़े ईंट मिट्टी आदि होंगे। जिसमें पैर खराब हो। वहाँ तो जमीन पर भी घास के जैसे गलीचे बिछाये हुए होंगे। जिस पर चलते होंगे। प्रजा भी ऐसे ही चलती है। तुम बच्चे समझते हो हम नई दुनिया मे होंगे। जहाँ कोई किसम की मिट्टी आदि ना होंगी जो दाग हो । ऐसी कोई चीज़ न होंगी जो ठोकर आदि लगे।... स्वर्ग में तो क्या लगा पड़ा होगा। कितनी रोशनी होंगी। बत्ती भी देखने में नहीं आवेंगी। सोझरा ही सोझरा होगा।" (मु.9.3.71 पृ.1 मध्यांत)	Download

128	तुम स्वर्ग में कितने सुखी रहते हो । हीरे जवाहरों के महल होते हैं वहाँ। अमेरिका, रशिया आदि में कितने साहुकार हैं। परन्तु स्वर्ग जैसे सुख हो न सके। सोने की ईटों महल तो कोई बना न सके। सोने के महल होते ही है सतयुग में। यहाँ सोना होता ही कहाँ? वहाँ तो लेट्रिन में भी जवाहर लगे हुए होंगे। यहाँ तो सोना है ही कहाँ। हीरों का भी कितना दाम हो गया है।" (मु. 5.3.70 पृ.1 अंत)	Download
129	कितने बड़े-2 मकान 50 मंजिल, 100 मंजिल के बनाते हैं। स्वर्ग में कोई इतने मंजिल की मकान आदि होते ही नहीं। आजकल यहाँ यह बनाते रहते हैं। तो मनुष्य समझते हैं सतयुग में भी ऐसे मकान नहीं होते हैं जैसे यहाँ हम बनाते हैं। बाप खुद समझाते हैं इतना झाड़ सारे विश्व पर होता है तो वहाँ माड़ियाँ आदि बनाने की दरकार ही नहीं। ढेर-के-ढेर जमीन पड़े रहते हैं। यहाँ तो जमीन है नहीं। इसलिए जमीन का दाम कितना बढ़ गया है। वहाँ तो जमीन का भाव लगता ही नहीं। न तो म्युनिसीपैलिटी का टैक्स आदि लगता है। जिसको जितनी जमीन चाहिए ले सकते हैं। वहाँ तुमको सभी सुख मिल जाते हैं। सिर्फ बाप की इस एक नालेज से। मनुष्य 100 माड़ियाँ आदि बनाते हैं उसमें भी पैसा तो लगता है ना। वहाँ पैसे आदि लगते ही नहीं। अथाह धन रहता है। पैसे का कदर ही नहीं। ढेर के ढेर पैसे होंगे तो क्या करेंगे? सोने के, हीरे के,मोतियों के महल बना देते हैं।" (मु. 27.6.69 पृ.1 आदि)	Download
130	वह सूर्य, चांद और सितारे आदि तो हैं ही हैं। सतयुग में भी हैं तो अभी भी हैं। इनका बदल सदल नहीं होता।" (मु. 12.7.76 पृ.2 अंत)	Download
131	वहाँ तो मंदिर, म्युजियम होते नहीं। नैचुरल ब्युटि होती है। मनुष्य बहुत थोड़े। सुगंध आदि की भी दरकार नहीं रहती। हर एक को अपना-अपना फर्स्ट क्लास बगीचा होता है, फर्स्ट क्लास फूल होते हैं। वहाँ की तो हवा भी फर्स्ट क्लास होगी। कब तंग नहीं करेंगे। वहाँ सदैव बहारी मौसम रहेगी। अगरबत्ती की भी दरकार नहीं।" (मु. 12.6.74 पृ.2 अंत)	Download

132	ऐसी सफियतें होंगी जो न गर्मी न ठंडी होंगी। पंखे भी बहुत होते हैं, जब गर्मी होती है। वहाँ तो गर्मी का दुख ही नहीं, जो पंखे आदि हो। उसका तो नाम ही है स्वर्ग। हैविन। वहाँ अपार सुख होते हैं।" (मु. 16.4.68 पृ.3 मध्यांत)	Download
133	आपके फॉरेन के स्थान बहुत छोटे-2 टापू बन जाएँगे, जहाँ पिकनिक करने जाएँगे।" (अ.वा. 31.12.70 पृ.336 मध्य)	Download
134	जो गाया हुआ है देवताओं के आगे प्रकृति हीरे रत्नों की थालियां भर कर आये। पृथ्वी और सागर यह आपके लिए चारों ओर फैला हुआ सोना और मोती, हीरे एक स्थान पर इकट्ठा करने के निमित्त बनेंगे। इसी को कहा जाता है थालियां भरकर आये। थाली में बिखरी हुई चीज़ इकट्ठी हो जाती है ना। तो यह भारत और आस पास यह स्थान थाली बन जायेंगे। सेवक बनकर विश्व के मालिकों के लिए तैयारी कर आपके आगे रखेंगे। (अ.वा.4.2.80 पृ.269 अंत)	Download
135	बाप कितना समझाते हैं सतयुग में बीमारियाँ आदि होती ही नहीं। यहाँ तो अनेक प्रकार की बीमारियाँ अनगिनत हैं। कितनी दवाईयाँ डॉक्टर लोग देते हैं। वहाँ यह खांसी आदि कुछ भी नहीं होती। (मु. 10.8.68 पृ.1 मध्यांत)	Download
136	सतयुग में यह भूत प्रेत आदि कुछ भी नहीं होगा।" (मु. 4.3.69 पृ.1अंत)	Download
137	अभी तक हिन्दी नहीं समझते हो ! क्योंकि सतयुग में जाना है, वहाँ आपकी यह (सिंधी) भाषा नहीं हो गी। आप सबकी आदि भाषा हिन्दी है ना। तो बोलना नहीं भी आवे तो समझना तो आवे ना।.... समझने के लिए पुरुषार्थ करो; क्योंकि बाप जिस भाषा में बोलते हैं वह भाषा तो समझनी चाहिए ना। वैसे भी देखो अगर इंग्लिश बोलने वाले माँ-बाप होंगे तो बच्चे भी क्या सीखेंगे? तो बाप की भाषा तो समझनी चाहिए।" (अ.वा.9.12.93 पृ.57 आदि)	Download
138	कलियुगी दुनियाँ के कोई भी रसम-रिवाज़ वहाँ हो ते नहीं। यहाँ होती है लोक-लाज कुल की मर्यादा..... फ़र्क है ना। वहाँ के मर्यादा को सत्य मर्यादा कहा जाता है। यहाँ तो है असत्य मर्यादा।" (मु.7.6.68 पृ.1 मध्यादि)	Download

139	सतयुग-त्रेता में कोई पतित होता नहीं उसको कहा ही जाता है स्वर्ग।" (मु. 3.6.79 पृ.2 मध्य)	Download
140	वहाँ (सतयुग में) तो बड़ी फर्स्ट क्लास सफाई रहती है।.... वहाँ शरीर का तो मूल्य कोई रहता नहीं। बस बिजली पर रखा और खलास।.... ऐसे भी नहीं कि हड्डियां नदियों आदि में डालते होंगे। वहाँ यह रसम रिवाज़ होंगी ही नहीं। शरीर को उठाया और डाला बिजली में। शरीर को उठाकर ले जाना यह भी तकलीफ है ना। वहाँ यह तकलीफ भी होती नहीं। बिजली में डाला, खलास। यहाँ तो शरीर पिछाड़ी कितना मनुष्य रोते हैं। याद करते हैं। ब्राह्मण खिलाते हैं। वहाँ यह बातें नहीं होती। (मु.3.11.71 पृ.2 मध्यांत)	Download
141	सतयुग में तुम पवित्र रहते थे। उसको कहा ही जाता है पवित्र दुनिया। एक बच्चा होता है। यहाँ तो 5-7 बच्चे पेट चीरकर निकालते हैं। सतयुग में ला बना हुआ है। जब समय होता है तो दोनों को सा. हो जाता है। अब बच्चा होने वाला है। इसको कहा जाता है योगबल। पूरे टाइम पर बच्चा पैदा हो जाता। कोई तकलीफ नहीं। कब रोने का आवाज़ नहीं। आजकल तो कितनी तकलीफ से बच्चे पैदा होते हैं। यह है ही दुःखधाम। सतयुग है सुखधाम।" (मु.8.8.65 पृ.2 मध्यांत)	Download
142	स्वर्ग में मोह होता नहीं। वहाँ जब शरीर छोड़ने का टाइम होता है तो बैठे-2 खुशी से छोड़ देते हैं। शरीर भी टाइम पर छोड़ते। स्त्री कब विडो (विधवा) बनती नहीं। जब टाइम पूरा होता है, बूढ़ा होता है तो समझते हैं अब फिर जाकर बच्चा बनेंगे। फिर वो भी बूढ़े बन जाते हैं तो शरीर छोड़ देते हैं सर्प का मिसाल। (मु.8.8.65 पृ.2 अंत)	Download
143	वहाँ कब अकाले मृत्यु नहीं होता। यहाँ तो देखो कैसे अकाले मृत्यु होती रहती है। गर्भ में भी मर जाते हैं। तुम अभी काल पर जीत पा रहे हो। जानते हो वह है अमरलोक। यह है मृत्युलोक। वहाँ जब बूढ़े होते हैं तो साक्षात्कार होता है। हम यह शरीर छोड़ जाकर बच्चा बनेंगे। बुढ़ापा पूरा होगा और शरीर छोड़ देंगे। नया शरीर मिलेगा वह तो अभी भी है ना। बैठे-2 खुशी से शरीर छोड़ देते हैं। यहाँ तो उस अवस्था में रह शरीर छोड़ने लिए मेहनत लगती है। यहाँ की मेहनत वहाँ फिर कॉमन हो जाती है।" (मु.10.4.70 पृ.1 मध्य)	Download

144	वहाँ भी तुम बूढ़े होंगे तो सा. होगा हम बच्चा बनते हैं। खुशी होती है। बचपन तो सबसे अच्छा है। बैठे-2 शरीर छोड़ देते हैं। जाकर बच्चा बनते हैं। बाजे आदि बजते रहते हैं। दुःख की कोई बात नहीं। गुल-2 बच्चा निकलता है। गंद आदि कुछ नहीं। बिल्कुल स्वच्छ रीति निकलते हैं।" (मु.21.9.75 पृ.3 मध्यादि)	Download
145	यह गायन भी है स्वर्ग में सुख बहुत होते हैं। आयु भी बड़ी होती है। अकाले मृत्यु नहीं होती।" (मु. 3.9.69 पृ.2 अंत)	Download
146	इस पुरुषार्थ से हम ऐसा श्रृंगारा हुआ बनेंगे। वहाँ क्रिमिनल आई होती नहीं, तो भी अंग सभी ढके हुए होते हैं। यहाँ तो देखो कितने नंगी रहती हैं, जो कोई भल देखे और हमारे पर फिदा होकर हमारा भी काला मुँह करें, अपना भी करें। यह छी-2 बातें रावण राज्य में सीखते हैं। इस ल.ना. को देखो ड्रेस आदि कितनी अच्छी है। यहाँ सभी हैं देह-अभिमानी। इन्हों को देह-अभिमानी नहीं कहेंगे। इन्हों की तो नेचरल ब्यूटी रहती है। बाप तुमको ऐसा नेचरल ब्यूटीफुल बनाते हैं।" (मु. 5.12.68 पृ.2 आदि)	Download
147	इतना बड़ा तो ल.ना. होते नहीं। बहुत बहुत 6 फुट होंगे।" (मु.31.3.73 पृ.3 अंत)	Download
148	लक्ष्मी-नारायण की पतली कमर कहाँ है? ठीक जैसे होते हैं तैसे होते हैं। ये सभी नॉनसेन्स निकली हुई है कहाँ-2 से। भक्तिमार्ग में जो किस्म-2 के चित्र बनाए हैं तो समझते हैं वहाँ देवताएँ ऐसे थे। देवताएँ एकदम हूबहू (ऐसे हैं) जैसे अभी इस समय में अच्छे, खूबसूरत, नेचुरल ब्यूटी बच्चे हैं; क्योंकि बाबा ने समझाया है ना कि पाँच तत्व इस समय में तमोप्रधान हैं, जिनसे शरीर बनते हैं। वहाँ सतयुग में सतोप्रधान हैं, तो उनसे काया कल्प वृक्ष समान।" (मु.17.9.64 पृ.5 आदि)	Download
149	आत्मा पवित्र बनने से शरीर भी फर्स्ट क्लास मिलता है। यहाँ तो आर्टिफिशियल फैशन है। पाउडर आदि लगाकर सुहेनी बन जाती हैं। वहाँ तो नैचुरल ब्युटिफुल होते हैं।" (मु.12.6.74 पृ.3 मध्यांत)	Download

150	वहाँ शरीरों की कोई मरम्मत नहीं होती है जितनी यहाँ करते हैं। कितनी मरम्मत करनी पड़ती है। वहाँ तो भले बुड्ढे भी हो जाओ, तुम्हारे दाँत वगैरह सब साबूत। मजाल है जो वहाँ कोई का एक दांत टूट सके ! लॉ नहीं कहता है; क्योंकि दाँत टूटा तो डिसफिगर हुआ। यानी देखने में कुछ बुरा लगे। ऐसी कोई भी चीज़ नहीं होती है। एकदम 16 कला सम्पूर्ण। शरीर भी ऐसा फर्स्टक क्लास। कभी झूँझा, चूचे, चंगाले या लंगड़े-लूले होते ही नहीं हैं। यहाँ तो लंगड़े-लूले जन्म भी ले लेते हैं, अंधे भी जन्म ले लेते हैं, दो-चार मत्थे वाले भी जन्म ले लेते हैं, वहाँ बिल्कुल ही एक्युरेट।" (मु.17.9.64 पृ.5 मध्यादि)	Download
151	वहाँ आत्मा प्योर होने से शरीर भी मखमल जैसा होता है। नो डिफेक्टेड।" (मु. 27.2.68 पृ.3 मध्यादि)	Download
152	सतसुग में सब कर्मइन्द्रियाँ निर्विकारी बन जाती हैं। अंग-2 सुगंधित हो जाते हैं। अभी तो बाँसी छी-2 अंग हैं। ..... अभी तो सब कर्मइन्द्रियों में बदबुएँ हैं। यह शरीर कोई काम का नहीं।" (मु.12.7.74 पृ.1 अंत, पृ.2 आदि)	Download
153	तुम ब्रह्माकुमारियाँ कहती हो हम भ्रष्टाचारी भारत को 10 वर्ष में श्रेष्ठाचारी बनावेंगी।" (मु.30.8.66 पृ.1 आदि)	Download
154	जब कोई लिटरेचर बनाना है तो उसमें तारीख लिखनी है। आज से यानी 1966 से 10 वर्ष के अन्दर हम अपनी इस भारतभूमी को स्वर्ग बना कर छोड़ेंगे।" (मु.13.8.66 पृ.1 आदि)	Download
155	हम अख़बार में क्या डालें। यह भी तुम लिख सकते हो यह महाभारत लड़ाई कैसे पावन दुनिया का गेट खोलती है, आकर समझो। कल्प पहले मिसल इस महाभारत लड़ाई से सतयुग की स्थापना कैसे होती है, आकर समझो। 10 वर्ष में देवी-देवताओं की राजधानी स्थापन हो जावेगी। गॉड फादर से वर्थ राइट लेना हो तो आकर लो।" (मु. 24.11.66 पृ.2 मध्यांत)	Download
156	भारत माता (शिव) शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। (अ.वा.21.1.69 पृ.24 आदि)	Download

157	तुमको मालूम है टिड्डियों का झुंड कितना बड़ा होता है। सबकी यूनिटी होती है। पहले आगे वाला बैठा तो सब बैठ जायेंगे। मधुमक्खियाँ भी ऐसी होती हैं। रानी ने घर छोड़ा तो सब भागेंगी उनके पिछाड़ी। वह जैसे उन्हों का साजन हुआ। उनमें फिर सजनी ही राज्य करती है हमजिन्स पर। (मु.17.11.91 पृ.2 आदि)	Download
158	माखी (शहद) की मक्खियाँ होती हैं उनमें भी क्वीन होती है। बाकी सब उनके आसुक होती है। क्वीन गई तो उनके पिछाड़ी सब भागेगी। लव है ना। कितनी समझ है उनमें।” (मु.20.1.74 पृ.3 अंत)	Download
159	सबसे तीखा झुण्ड मधुमक्खियों का होता है। बहुत आपस में एकता होती है। इन्हों का हेड रानी होती है। भारत में भी पहले-2 रानी पीछे राजा; इसलिए मदरकन्ट्री कहते हैं।” (मु.24.6.68 पृ.2 मध्यादि)	Download
160	मक्खियों की भी रानी होती है। रानी के साथ पीछे-2 सब मक्खियाँ जाती हैं। रानी अर्थात् माँ साथ उनका कितना संबंध है।” (मु. 3.6.76 पृ.2 आदि)	Download
161	लक्ष्मी का यादगार डबल रूप में एक तरफ धन-देवी अर्थात् दाता का रूप संगमयुग का यादगार है जो सदैव धन देते रहते हैं। यह संगमयुग पर अविनाशी धन-देवी के रूप में चित्र दिखाया जाता है। सतयुग में तो कोई लेने वाला ही नहीं होगा तो देंगे किसको? यह संगमयुग के श्रेष्ठ कर्तव्य की निशानी है। और दूसरे तरफ ताजपोशी दिवस के रूप में मनाया जाता है। ताजपोशी भविष्य की निशानी है और धन-देवी संगमयुग के दाता रूप की निशानी है। दोनों ही युग को मिला दिया है; क्योंकि संगमयुग छोटा-सा युग है; लेकिन जितना छोटा है उतना महान है। सर्व महान कर्तव्य, महान स्थिति, महान प्राप्ति, महान अनुभव इस छोटे-से युग में होते हैं। बहुत प्राप्तियाँ, बहुत अनुभव होते और संगमयुग के बाद सतयुग जल्दी आता है, इसलिए संगमयुग और सतयुग के चित्र और चरित्र मिला दिए हैं। चित्र सतयुग का, चरित्र संगम का दे देते हैं।” (अ.वा. 21.10.87 पृ.94 अंत)	Download
162	कितने भी कारण हो- मैं निवारण करने वाली हूँ न कि कारण को देख कमजोर बनना है।... इसको विजयी कहा जाता। ऐसे श्रेष्ठ लक्षणधारी	Download

	भविष्य में लक्ष्मी रूप बनते हैं। लक्ष्मी अर्थात् लक्षण वाली।" (अ.वा. 4.3.72 पृ.239 अंत)	
163	लक्ष्मी स्वरूप अर्थात् धन-देवी और नारायण स्वरूप अर्थात् राज्य अधिकारी। लक्ष्मी को धन-देवी कहते हैं। वो धन नहीं; लेकिन ज्ञान के खज़ाने जो मिले हैं उस धन की देवियाँ।" (अ.वा. 21.01.80 पृ.3 आदि)	Download
164	लक्ष्मी अर्थात् सम्पत्ति की देवी। वह स्थूल सम्पत्ति नहीं, नॉलेज की सम्पत्ति, शक्तियों रूपी सम्पत्ति की देवी अर्थात् देने वाली।... चाहे नॉलेज देवे, चाहे शक्तियाँ देवे।" (अ.वा. 23.1.76 पृ.20 आदि)	Download
165	टीचर को भी सबक देना है। खिर होना चाहिए। कोई भी कुछ कहेगा नहीं। फिर भी बाप के बने तो पेट तो मिल सकता है। शरीर निर्वाह के लिए बहुत मिलेगा। अहमदाबाद में वेदान्ती बच्ची है। उसने इम्तिहान दिया, उसमें एक प्वाइंट थी गीता का भगवान कौन? इसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया, इनको नापास कर दिया। और जिन्होंने कृष्ण भगवान लिखा उनको पास कर दिया। जिस बच्ची ने सच बताया तो उनको ना जानने कारण नापास कर दिया। फिर लड़ना पड़े। मैंने तो यह सच लिखा है। गीता का भगवान है ही निराकार परमपिता परमात्मा। कृष्ण, जो देहधारी है वो तो हो ना सके। परंतु बच्ची की दिल थी इस रूहानी सर्विस करने की तो छोड़ दिया। नहीं तो ऐसी-2 बातों में तुम लड़ों तो नाम बाला हो जावे। गवर्मेंट कहे यह समझाते तो बहुत अच्छा है।" (मु. 7.7.70 पृ.2 मध्य)	Download
166	दीपमाला पर लक्ष्मी का चित्र थाली में रख उनकी पूजा कर फिर रख देते हैं। वह है महालक्ष्मी। युगल है ना। मनुष्य इन बातों को नहीं समझते। लक्ष्मी को पैसा कहाँ से मिलेगा। युगल तो चाहिए ना। तो है युगल। नाम फिर महालक्ष्मी रख देते हैं।" (मु. 14.10.68 पृ.2 मध्य)	Download

167	दीपमाला पर लक्ष्मी का आवाह्न करते हैं क्यों? नारायण ने क्या गुनाह किया। लक्ष्मी को भी धन तो नारायण ही देता होगा ना। वास्तव में धन कोई लक्ष्मी से नहीं मिलता। धन तो जगतअम्बा से मिलता है। तुम जानते हो जगतअम्बा वो ही फिर श्रीलक्ष्मी बनती है तो उन्होंने अलग-2 कर दिया है।" (मु. 14.10.73 पृ.3 मध्यांत)	Download
168	हे सत्यभामा, हे कर्मादेवी! तुम क्या करती हो ? जब तक औरों को स्वर्गवासी न बनाया है तो स्वर्ग में कैसे जावेंगे! बस, ऐसे ही बैठे हो। कौड़ी से हीरे जैसा साहुकार बनाना यह बाप का धंधा बच्चों को भी करना चाहिए ना! भारत को हीरे जैसा पावन बनाओ। " (मु.14.7.63 पृ.2 मध्य)	Download
169	तो अब खड़ा होना चाहिए। ऐसे शंकराचार्य की सेना पर जीत पहननी है। ऐसे थोड़े ही घर में चुप कर बैठने से जीत पहनेंगे। झुण्डों में (घु)स जाना है। उनको	Download
170	अरे ,बंधन को तो तोड़ना पड़े ना! समझाना है, हमको तो सर्विस पर जाना है। कौरवों को माइयों और पाण्डवों की माइयाँ की भेंट करो। वो हैं हिंसक; तुम अहिंसक। वो कितनी फुर्त हैं, बाहर जाकर लेक्चर आदि करती हैं। तुम तो वो ही जैसी गृहस्थी रीढ़-बकरियाँ हो। ज्ञान-योगबल से समझाना तो है ना! बंधन करते-2 रह जावेंगी। सर्विस कहाँ की? प्रजा कहाँ बनाती हो ? " (मु.14.7.63 पृ.2 अंत,पृ.3 आदि)	Download
171	शेरनी शक्तियों की तो शेर पर सवारी दिखाई है। शेर बहादुर हो ता है। तुम रीढ़-बकरी तो नहीं हो ना। शेर सदा गजगोर करते हैं। तुम भी ज्ञान गजगोर करते हो। जो बादल नहीं बनते, वह क्या महारानी-महाराजा बनेंगे? " (मु.14.7.63 पृ.4 मध्यादि)	Download
172	शिव भगवानुवाच माताएँ स्वर्ग का द्वार खोलती हैं।... इसलिए वंदे मातरम् गाया जाता है। वन्दे मातरम् तो पिता भी अण्डरस्टुड है। (मु.10.6.69 पृ.2 अंत)	Download
173	शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको।" (मु.14.5.70 पृ.2 आदि)	Download
174	सहज नष्टोमोहा होना यह बहुत काल के योग के विधि की सिद्धि है।" (अ.वाणी 25.11.93 पृ.26 आदि)	Download

175	बाप विनाश उनसे कराते हैं जिस पर कोई पाप न लगे।” (मु. 29.4.70 पृ.1 मध्य)	Download
176	तुम कह सकते हो रामायण की कथा सारी भारत पर ही है। सिर्फ समझाने का खिर चाहिए। (मु. 12.1.75 पृ.3 अंत)	Download